संसद में बहस

वन एवं पर्यावरण

- Hkxr flag dk';kjh
- jktho izrki #Mh

Hkkjrh; turk ikVh

प्रकाशकीय

पर्यावरण असंतुलन, देश के सामने एक प्रमुख चुनौती है। जल, जंगल, जमीन हमारे जीवन का आधार है लेकिन तीनों ही प्रदूषित हो रहे हैं। तथाकथित विकास के नाम पर वनों को तेजी से काटा जा रहा है, यह चिंता का विषय है।

गत 3 अगस्त को राज्यसभा में पर्यावरण व वन मंत्रालय के कार्यक्रम पर चर्चा हुई। चर्चा में हिस्सा लेते हुए भाजपा सांसद श्री भगत सिंह कोश्यारी एवं श्री राजीव प्रताप रुडी ने वन एवं पर्यावरण को लेकर संप्रग सरकार की नीतियों की जमकर आलोचना की। श्री भगत सिंह कोश्यारी ने अपने भाषण में पर्यावरण के भावात्मक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्री कोश्यारी ने आक्रोश प्रकट करते हुए कहा कि पर्यावरण व वनों का विषय बहुत महत्वपूर्ण है किंतु इसके लिए पूरे बजट का 1 प्रतिशत प्रावधान भी नहीं किया गया है। वहीं श्री राजीव प्रताप रुडी ने कहा कि मौसम परिवर्तन के कारण कई राज्यों में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई हैं। वनों को काटा जा रहा है, जिसके कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो रही है। तापमान बढ़ना भी इसका एक कारण हो गया है।

हम इस पुस्तिका में श्री भगत सिंह कोश्यारी एवं श्री राजीव प्रताप रुडी के भाषणों का पूरा पाठ प्रकाशित कर रहे हैं ताकि जनता के बीच संप्रग सरकार की वन व पर्यावरण के प्रति नाकामी का पर्दाफाश हो सके।

çdk'kd
Hkkjrh; turk ikVh
11] v'kksd jksM]
ubZ fnYyh&110001

vxLr] 2009

वनों से ही देश की समृद्धि

& Hkxr flag dk';kjh

आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, आपका धन्यवाद है कि आपने वन और पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया है। मान्यवर, हमारे जयराम जी का यह विषय, वन एवं पर्यावरण एक किस्म से सूर्य के नीचे, आसमान के नीचे और आसमान के ऊपर जितने भी विषय हैं, लगभग सभी विषय इस वन एवं पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। मैं देख रहा था कि हमारे वन एवं पर्यावरण मंत्री को क्या बजट मिला है। यानी जो आज का सबसे महत्वपूर्ण विषय है, विशेषकर जब से जी – 8 का सम्मेलन हुआ है, मैं थोड़ा–बहुत अखबार पढ़ता हूं तो देखता हूं कि रोज ही क्लाइमेट चेंज पर हमारे स्टैण्ड के खिलाफ इतना अधिक आ रहा है, तो स्वाभाविक है कि यह विषय इतना महत्वपूर्ण है कि शायद हमारे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी के पास जितने विषय हैं, वे सभी विषय एक किस्म से पर्यावरण के अंतर्गत आने चाहिए। मैं बजट देख रहा था कि कोई दस लाख या बीस लाख करोड़ से ऊपर का हमारा बजट प्रावधान है। दुख का विषय यह है कि उसमें से हमारे इतने महत्वपूर्ण विषय पर वन एवं पर्यावरण मंत्री को कुल मिलाकर जो योजनागत है, वह कुछ 1880 करोड़ जितना बजट मिला हुआ है और थोड़ा–बहुत हजार, दो हजार नॉन प्लान्ड होगा। कुल मिलाकर एक परसेंट भी आपका बजट नहीं है। मेरे सामने पुराना नेशनल एक्शन प्लान ऑन क्लाइमेट चेंज रखा हुआ है। इनके बड़े ही प्वाइंटेड मिशन प्लान्स हैं। यह 2007 का है, तब से दो साल बीत गए हैं। इनका यह जो नेशनल मिशन प्लान है, उसे पढ़कर ऐसा लगता है कि सारा देश शायद अगले चार–पांच वर्षों में जो पर्यावरण एवं प्रदूषण संबंधी समस्याएं हैं, उनसे मुक्त हो जाएगा और देश अच्छा और सुंदर बनेगा। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि इतने महत्वपूर्ण विषय पर हम सभी लोगों को जितना ध्यान देना चाहिए था, उतना नहीं दिया है। अभी हमारे पूर्ववक्ता आदरणीय मैत्रेयन जी इसके टेक्नीकल विषय पर

और क्लाइमेट चेंज के सारे विषय पर बोल रहे थे। हमारे माननीय सदस्य श्री रूडी जी इस पर आगे और बोलेंगे। मैं इसके साइंटिफिक, टेक्नीकल और हमारे जो डाटा हैं, को अधिक जानने की बजाय इसके कांसेप्च्युअल, कल्चरल और स्प्रिचुअल यानी भावात्मक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पक्ष की ओर ज्यादा जाना चाहूंगा। मान्यवर, मनुष्य ने संसार में जब से आंख खोली है, मनुष्य का सीधा संबंध प्रकृति से हुआ है। हम इस देश की सभ्यता को जानते हैं, संस्कृति को जानते हैं कि इस दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद है। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य का सीधे ही जिस प्रकृति से संबंध जुड़ा, चंद्रमा, तारे, सूर्य, अग्नि और हमारे जो भी पेड़–पौधे हैं, उन सभी पर उसका ध्यान गया और मनुष्य ने एक किस्म से उनकी पूजा शुरू की।

एक किस्म से उसने उनकी पूजा शुरू की, यानी मनुष्य ने एक प्रकार से हमारे जो जंगल हैं, जो वन हैं, उनकी प्रार्थना शुरू की। हमारे इस देश के अन्दर जब व्यक्ति प्रातःकाल उठता है, मैं नहीं जानता कि सब पंथों में यह बात है या नहीं, इस देश के अधिकांश निवासी पहले जब उठा करते थे और आज भी जब लोग प्रातःकाल उठते हैं, तो वे पृथ्वी पर पाँव रखने से पहले कहते हैं, ''समुद्र वसने देवी पर्वत स्तनमंडले, विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शम् त्वमस्वमे''अर्थात् हे धरती माता, तुम समुद्र वसना हो, हमारे मैत्रेयन जी बिल्कुल coastal area की बात कर रहे थे, इसमें पहला ही समुद्र से शुरू किया गया है और सीधे हिमालय पर्वत की ओर बोला गया है। हमारी जो धरती माँ है, इस धरती माँ पर पैर रखते ही हम कहते हैं कि हे, माँ हम तुम पर पैर रख रहे हैं, यह हमारी मजबूरी है, तुम हमें क्षमा करो। इस पृथ्वी के प्रति यह भाव है। इसी कारण से आप जानते हैं कि इस धरती को हम भारत माता भी कहते हैं। इसलिए हम सब जानते हैं कि बंकिम चन्द्र चटर्जी ने वन्दे मातरम और सुजलाम् सुफलाम् शस्य श्यामलाम्, एक ऐसे भारत की कल्पना की थी। आप लोग कहते हैं Green India. हम बात करते हैं Green India की, लेकिन अन्दर से how much green are we? हम कितने हरित हैं, वास्तव में हम उसके लिए कितने व्यथित हैं, अगर यह देखा जाए, तभी कहीं–न–कहीं हमारे बंकिम चन्द्र चटर्जी के जैसे भाव के उद्‌गार आते हैं। जैसे वेद हैं या पुराण या रामायण या महाभारत हैं, और भी दूसरे ग्रंथ हैं, जैसे बाइबिल या कोई दूसरा ग्रंथ लें, दार्शनिकों के ग्रंथों को लें, एक किस्म से आज वे हमारी प्रेरणा के स्रोत बन गए। लोगों ने भारत माता के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। प्राण न्यौछावर केवल स्वतंत्रता के लिए नहीं किए, स्वतंत्रता के बाद हमारा यह देश शस्य श्यामला होगा, यह सुखी, समृद्ध होगा,

इसलिए इस प्रकार का एक भाव हमारे देश के अन्दर आया। यह दुर्भाग्य है कि पिछले 100–200–250 वर्षों में जब यह देश गुलाम रहा, तो ऐसा लगा कि इस देश के अन्दर जो पूजा–पाठ कर रहे हैं या धरती के अन्दर जो पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, इनकी पूजा करके, इनका आदर करके जो लोग इनका सम्मान करते हैं, उनको कहीं पगन, कहीं हिरण, और भी कोई शब्द होंगे, मुझे ध्यान नहीं, अरुण जी जानते होंगे, ऐसे–ऐसे शब्दों का उपयोग करके, मानो कि हेय है, लेकिन यह एक शाश्वत सत्य है, **eternal truth** है कि कहीं–न–कहीं हम प्रकृति से हैं, तो प्रकृति के प्रति उसका आदर करना, उसका सम्मान करना और इस नाते से उनके अन्दर एक जीव है। इतने हजारों लाखों साल तक इतने पेड़ पौधे बने रहे, हमारी ये सरिताएँ बनी रहीं, तो शायद कहीं–न–कहीं उसके पीछे का भाव यह था कि चाहे समुद्र हो, चाहे हिमालय हो, चाहे धरती का कोई कण हो, उसके प्रति हमारा एक लगाव था, हमारा उसके प्रति मातृत्व का भाव था, उसके कारण ये चीजें आज तक बनी रहीं। जयराम जी, मुझे ध्यान आ रहा है, जब मैं पढ़ता था, मैं पहाड़ की बात कह रहा हूँ, इतने पेड़ कटते थे, अब किनका राज्य था, मैं नहीं बोलूँगा, वरना it will become a political matter, परन्तु सन् 1947 में जब देश आजाद हुआ और सन् 1947 से लेकर 1977 तक, जब 1980 में आपका कानून बना, उसके पहले तक, ज्यादा–से–ज्यादा 1972 लगा सकते हैं, जब आपका वन का कानून बना, लेकिन लोग पेड़ ऐसे काटते थे, मानो जो राज्य कर रहे हैं, जिनके परिवार के लोगों ने आन्दोलन में भाग लिया था, जैसे वे अंग्रेजों को भगाने के लिए कुछ कर रहे हों। इस तरह से पेड़ काट कर पूरे जंगल खत्म हुए। यह तो अच्छा है कि बीच में हमारे यहाँ चिपको आन्दोलन चला। हमारी गौड़ा देवी, चण्डी प्रसाद जी भट्ट, सुन्दर लाल बहुगुणा जी, ऐसे लोग आ गए और इन लोगों ने एक प्रकार से पेड़ों से चिपक करके, मैं इसलिए कह रहा हूँ कि हमारे यहाँ मोती लाल वोरा जी बहुत घूमे, पेड़ों से उन लोगों को कितना प्रेम था कि लोग उससे चिपक गए। निश्चित रूप से Green Peace वगैरह मेरे ख्याल से बहुत बाद के आन्दोलन हैं। ऐसा एक आन्दोलन शुरू हुआ। उस आन्दोलन के माध्यम से कहीं–न–कहीं इस देश के अन्दर और सारे विश्व के अन्दर एक जागृति आई कि देखो भाई, अगर हमें पर्यावरण बचाना है, तो उसका जो आवश्यक तत्व है, वह है पेड़, वह है जंगल। इसलिए उसकी ओर लोगों का ध्यान गया। यदि हम लोग अपने बच्चों को इस प्रकार की चीज़ें सिखा सकें। यहां बहुत से ऐसे लोग हैं, जो अपने उस समय के अनुभवों को याद कर सकते हैं, जो उनके प्रारम्भिक

जीवन में हुए। मुझे आज भी अच्छी तरह से ध्यान है कि हम लोग पीपल के पेड़ को कभी नहीं काटते थे। हमारी माता जी तुलसी की पूजा किया करती थीं। मान्यवर, मुझे आज भी अच्छी तरह से याद है, बचपन में अगर हम लोग कहीं नदी में मल– मूत्र कर देते थे, तो हमारे माता–पिता हमसे कहा करते थे, देखो बच्चों, आप लोगों को नदी में मल–मूत्र नहीं करना चाहिए। भले ही वहां पर कोई आदमी तुमको न देख रहा हो, परन्तु ऊपर से देखने वाला हमेशा तुम्हें देखता है। हम सबके अन्दर यह एक भाव था। मैं नहीं समझता कि जिस धर्म को मैं मानता हूं, केवल उसी में यह भावना थी। जो भी हमारे पुराने लोग थे, उन सबके अंदर यह भाव था कि हम ऐसा करेंगे तो इससे प्रकृति को नुकसान होगा। संभवतः उस समय के लोग इस चीज को जानते थे कि किस प्रकार से हम पर्यावरण को बचाएं और प्रकृति को सुरक्षित रखें। वे लोग भविष्य में आने वाले खतरे को जानते थे। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि धीरे–धीरे ये सब चीजें बदल गई हैं।

एक समय ऐसा आया कि लोगों ने उनके बारे में सोचना बिल्कुल खत्म कर दिया और हमारे पेड़ काटे जाते रहे। जब पेड़ बचाने का आन्दोलन खत्म हुआ, तो 'हाथी बचाओ आन्दोलन' और 'बाघ बचाओ आन्दोलन' आया। माननीय मंत्री जी, चाहे आप राजा जी पार्क चले जाइए या फिर कार्बेट पार्क चले जाइए, हर साल पांच–सात बाघ भी मरते हैं, लेकिन आप आश्चर्य करेंगे, मेरे यहां स्थिति यह है कि बाघों से दुगुनी हमारे वहां की जनता मरती है, लोग मर जाते हैं, क्योंकि बाघ बच्चों को खा जाते हैं, बूढ़ों को खा जाते हैं, महिलाओं को खा जाते हैं। इसका सीधा अर्थ यह है कि चूंकि उस समय पेड़ ज्यादा काट लिए गए, जिसके कारण जंगल कम हो गए और इसलिए ये जीव बिल्कुल घरों के अन्दर आ जाते हैं। अभी कुछ समय पहले देहरादून में, बिल्कुल शहर में एक घर के अन्दर बाघ घुस गया। इसका सीधा अर्थ यह है कि कहीं न कहीं आजादी के बाद के पचास वर्षों में हमने बहुत–सी गलतियां की हैं। अब भले ही पिछले आठ दस वर्षों से हम थोड़ा चेते हों, लेकिन इस पर अवश्य विचार किया जाना चाहिए कि यह गलतियां क्यों हुईं। मैं चाहता हूं कि आगे इस प्रकार की गलतियां न दोहराई जाएं। पर्यावरण संरक्षण के लिए जो नेशनल मिशन बनाया गया है, उसमें आपने Himalayan Ecological Mission का भी एक प्वाइंट रखा है, उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं। इससे हिमालय बचेगा, हिमालय की ईकोलॉजी ठीक रहेगी और तब शायद हम सब लोग ठीक रहेंगे, पूरा देश ठीक रहेगा और पूरा विश्व भी ठीक रहेगा। मेरा आपसे निवेदन है कि हम सब लोग एक बार फिर से

अपने उन सांस्कृतिक मूल्यों की ओर देखें। अभी कुछ समय पहले मैं **"The Pioneer"** अखबार पढ़ रहा था, मैं उनके लेख से कुछ कोट करना चाहता हूं। मेरा इनसे कोई परिचय नहीं है अथवा यह कोई मेरे संगठन से जुड़े हुए नहीं हैं, अरुण जी जैसे एक पत्रकार हैं एक माननीय सदस्यः हिरण्मय कार्लेकर हिन्दुस्तान टाइम्स और अन्य पत्रिकाओं में भी लिखते रहते हैं। मुझे उनका एक लेख बहुत अच्छा लगा, इसलिए मैं इसे कोट कर रहा हूं हिरण्य कार्लेकर जी ने अपने लेख के अंत में लिखा है, ''For that, one must turn to Vedanta, which views creation not as a process ordered by a God standing above and independent of it, but one through which the Universal Consciousness or Brahman manifested Itself, making Itself present in each part of the universe, animate and inanimate, and lending Its own divinity to it. Unfortunately, little has been done to integrate Vedanta's wisdom into a modern ecological weltanschauung."

मेरा आपसे निवेदन यह है कि अगर आपका यह मिशन है, तो कहीं न कहीं नयी पीढ़ी को भी इसके लिए प्रेरित किया जाए। अभी किसी सदस्य ने बोला था कि एजुकेशनल चीज़ों से क्या होगा, जो आपने इसे इसमें रखा है। मैं यह कहना चाहता हूं कि इस कार्य को इस ढ़ंग से किया जाए कि नयी पीढ़ी भी इस काम में आगे आए और उनका ध्यान भी इस ओर जाए। मैं आपको एक चीज़ और बताता हूं। हमारे आदरणीय मैम्बर श्री श्रीगोपाल व्यास जी ने प्रश्नकाल में कृषि मंत्री जी से एक प्रश्न पूछा था कि क्या कृषि मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सच है कि पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय में मंत्रोच्चारण व हवनकुंड में औषधी, जड़ी बूटियां डालकर फसल की बीमारियों को ठीक किया जा रहा है? मंत्री जी ने इसके उत्तर में कहा है, जी हां। इसके (ख) तथा (ग) के उत्तर में कहा है कि जी, हाँ। जंगली गेंदा तथा एलोवेरा पर परीक्षण में अकेले जैविक खाद की तुलना में जैविक खाद + होमा भस्म तथा जैविक खाद + हिमबियो (ट्राइकोडर्मा के स्थायी, आइसोलेट्स का मिश्रण) ने अधिक पैदावार दी है। सर, मैं यह सब इसलिए बोल रहा हूँ कि यह एक ऐसा विषय है कि यदि इस पर हमने ध्यान दिया, तो निश्चित रूप से हम सब लोग इसका एक अच्छा स्वरूप बना सकते हैं। मान्यवर, मैं आपसे एक विशेष निवेदन कर रहा हूँ कि आज इस देश का केवल 20 प्रतिशत भाग ही जंगलों से भरा है, जब कि इसे 33 प्रतिशत होना चाहिए। मान्यवर, अभी मैंने माननीय मंत्री जी से कहा था कि ठीक है, आपका

इतना बड़ा विषय है, लेकिन आपका बजट बहुत कम है। मैं जानता हूँ कि रावण के पास सब कुछ था, सारी सेना थी, लेकिन भगवान राम के पास न तो इतने धनुष थे, न ही बाण थे, न तो रथ था, न उतना कुछ था और न पुष्पक विमान ही था, लेकिन, अपने सत्व के आधार पर रामचंद्र जी ने लंका को विजय किया। तो भई, जैसे सारे ब्रह्मांड में श्री राम व्याप्त हैं, ऐसे आप यदि चाहते हैं कि हम इस देश के अन्दर एक प्रकार से ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए, केवल इसलिए नहीं कि विदेशी आपसे यह कह रहे हैं, उस पर ये जाएँगे, मैं नहीं जा रहा हूँ। उस पर आप निश्चित रूप से उनके डर से, जो अभी जी–8 में हुआ है, 2 डिग्री सेल्सियस की बात हुई है और इसके बारे में जो कुछ हुआ है, उस पर न जाकर मैं कहता हूँ कि हमारी जो आवश्यता है, उस आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए अगर हम इस दिशा में आगे जाएँगे तो हम वनों की रक्षा कर पाएँगे।

मान्यवर, यह जो 1980 का बना हुआ अधिनियम है, इसके माध्यम से जहाँ वन बचे हैं, वहीं आज हमारे पहाड़–– इस बात को अरुणाचल के लोग जानते होंगे। इसे हमारे पूरे उत्तराखंड के लोग भी जानते हैं कि हमारे यहाँ के लोगों का जीना दूभर हो गया है। अगर केवल कानून के हिसाब से आप चलेंगे, तो पहाड़ का आदमी अपने घर में जलाने के लिए एक लकड़ी तक नहीं जला सकता है और अपने मकान बनाने के लिए वहाँ का पत्थर नहीं निकाल सकता है। वहाँ के लोगों को बहुत hardship हो रही है। अगर आप उस पर –– मुझे बहुत अच्छा लगा कि आपने CAMPA के बारे में पुनर्विचार किया है। हमारे मंत्री जी कहते हैं कि आपने कुछ बहुत से अच्छे कार्य किए हैं। आपसे मेरा विनम्र निवेदन यह है कि वहाँ के लोगों की परेशानियों को देखते हुए, जैसे आपने अभी जनजातियों के लिए, उनके अधिकारों के लिए, उनकी जमीन के लिए आया है, ऐसे ही निश्चित रूप से इस पर पुनर्विचार करें,। मान्यवर, मैं यह इसलिए बोल रहा हूँ कि यह बहुत आवश्यक है। उनको अधिकार इसलिए है कि पूरे हिन्दुस्तान का 65 परसेंट वन पहाड़ों में हैं। अगर उसके बारे में नहीं बोलूँगा तो क्या बोलूँगा! मैं सारे शब्द जोर से बोल रहा हूँ। उसकी रक्षा के लिए वहाँ के लोगों को लगाव हो। इसके लिए मैं चाहूँगा कि आप वहाँ के लोगों को और अधिकार दें। जैसे वहाँ के वन–पंचायत हैं, वे खुद की रक्षा करते हैं। अगर वहाँ पर आग भी लगती है, तो वे खुद उससे उसकी रक्षा करते हैं। केवल सरकारी आशा पर रहेंगे, तो उसकी रक्षा नहीं होगी। मेरा पूरा विश्वास है कि आप इस दृष्टि से अपने कानून में हमारे यहां के लोगों को सुविधा देंगे।■

प्रकृति-हमारे देश का अभिन्न अंग

& jktho çrki :Mh

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय पर बोलने का मुझे मौका मिला है, इसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि जहां तक इसके दायरे का सवाल है, आज भारत दुनिया में सातवें स्थान पर है। पूरे भारतवर्ष में जो वन क्षेत्र है, वह लगभग 1.8 प्रतिशत है। हम लोगों ने अपना टारगेट बनाया है, कहा है कि इस देश में 33 फीसदी वन क्षेत्र होना चाहिए। लेकिन गौरतुल्य विषय यह है कि 1988 में जहां हमारा वन क्षेत्र 19.39 था, वह 2005 तक बढ़कर 20.64 हुआ, यानी पिछले पूरे तीस वर्ष में हम मात्र 1.24 प्रतिशत बढ़ पाए। यह विषय उठता है कि पर्यावरण के बारे में हमारी जो चिंता थी, सामान्य रूप से पिछले चालीस वर्षों में हम लोगों ने जब भी चर्चा की है, हम पौधे से शुरू करते हैं, वन से शुरू करते हैं। हम आज तक दुनिया में इस पर अपनी टिप्पणी करते रहे हैं और वन के बारे में चर्चा करते हैं कि वन का वृद्धिसार नहीं हो रहा है। जब जन जीवन के बारे में चर्चा होती है, वाइल्ड लाइफ के बारे में चर्चा होती है, तो हम बहुत सारे पशुओं के बारे में, जानवरों के बारे में, चिड़िया के बारे में, बायो डाइवर्सिटी के बारे में बात करते हैं। अगर हम मानक के तौर पर लें तो कहते हैं कि आजादी के बाद लगभग चालीस हजार जो लॉयन्स थे, वे घटकर चौदह सौ रह गए हैं। यह चिंता का विषय है। हम लोगों ने अभी हाल–फिलहाल पार्लियामेंट में भी लंबा डिसकशन किया था, जिसमें पन्ना के टायगर्स के मारे जाने की खबर थी और उसके बाद सरिस्का में भी टायगर्स के मारे जाने की खबर थी, लेकिन यह सब पर्यावरण का एक मानक है। हम इसके तहत चर्चा आगे ले जाना चाहेंगे। भारत अपने आप में बड़ी विरासत है। हमारे पास पहाड़ हैं, हमारे पास स्नो पीक्स हैं, हमारे पास नदियां हैं, हमारे पास वेस्ट लाइन्स हैं, हमारे पास डेजर्ट्स हैं, हमारे पास चेरापूंजी है, जहां दुनिया की सबसे ज्यादा बारिश

होती है। महोदय, आप देखेंगे कि हमारे पास बड़ी सी कोस्ट लाइन है। एक प्रकार से प्रकृति हमारे साथ है। यह हमारे देश का अभिन्न अंग है। क्योंकि सदन में बार–बार क्लाइमेट चेंज की तुलना होती रहती है और हम बार–बार इस पर चर्चा करते हैं। अभी इसकी तुलना करें तो जो मूल विषय है, मैं उस पर आना चाहूंगा। हमने देखा कि चर्चा हुई और अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई, कई राज्यों में अकाल की परिस्थितियां हैं, उसके कारण देश भर में एक तबाही का वातावरण है। हमारा फूड क्रॉप्स कम होने की स्थिति में है, यह चर्चा है। यह निश्चित रूप से चिंता का विषय है और हम इसे क्लाइमेट चेंज से जोड़ते हैं। अगर आज से चालीस वर्ष पहले यह घटना होती तो हम शायद इस बात की चर्चा नहीं करते कि यह पर्यावरण से जुड़ा हुआ है, लेकिन आज इस विषय पर कहीं न कहीं एक नया मानक आया है, जिसे हम क्लाइमेट चेंज कह रहे हैं और क्लाइमेट चेंज में जिस प्रकार से तापमान ऊपर जा रहा है, उसके आधार पर कह रहे हैं। महोदय, अगर मैं छोटा सा विषय उठाकर देखूं तो आज से पंद्रह–बीस वर्ष पहले बिहार में बहुत बाढ़ आती थी, तो हम यह मानकर चलते थे, उस समय हम कारण बताते थे कि आज नेपाल के बीच में, नेपाल के के भीतर कोसी की घटना हुई, जिसमें लगातार बाढ़ आ रही है और लाखों लोग बेघर हुए। हम लोग यह कहते थे कि नेपाल की तराइयों में, नेपाल के पहाड़ों में वृक्ष पतन हो रहा है।

Deforestation हो रहा है, जिसके कारण जब वहाँ बारिश होती है, तो उसके catchment area में पानी नहीं जम पाता है और silt के साथ, रेत के साथ, नदियों का प्रवाह भर देता है और उसके कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो रही है। हम यह मान कर चलते थे, यह एक बिज भी है कि पेड़ का पातन हो रहा है, पेड़ काटे जा रहे थे, siltation on था, जिसके कारण रेतों का जमाव बिहार और उत्तर प्रदेश की नदियों में हो रहा था, लेकिन अब हम लोगों ने उसमें जोड़ा है कि नहीं, सिर्फ यही एक कारण नहीं है। शिखरों पर जिस प्रकार से बर्फ पिघल रही है, बड़ी मात्रा में बर्फ पिघल रही है, उसके कारण भी, यह एक additional factor है, जिसके कारण प्रकोप है। प्राकृतिक प्रकोप के कई कारणों में से, पहले वन का पातन था, उसके साथ हम लोगों ने temperature को भी जोड़ा है और जो temperature rise का विषय है इसको भी हम लेकर चलते हैं।

महोदय, अब मैं उसी विषय पर आना चाहूँगा, क्योंकि बाकी विषयों के बारे में बहुत चर्चा हुई है और सामान्य रूप से सभी सदस्यों ने चर्चा की है। हम climate change किसे कहते हैं? Climate basically वह है, कई वर्षों तक जो सामान्य मौसम रहता है, उसको हम climate मानते हैं और जब

सामान्य मौसम में एक अवधि के भीतर परिवर्तन होता है, तो उसे हम climate change कहते हैं। इसी कारण climate change का definition दिया गया है। महोदय, अगर हम वर्ष 1000 से शुरू करें, तो वर्ष 1000 से लेकर वर्ष 1900 तक temperature का जो अनुपात था, वह लगभग –0.5 प्रतिशत था। इसलिए लगभग 900 वर्षों तक इस देश में, इस दुनिया में कोई परिवर्तन नहीं था। 1900 के बाद जो temperature का अनुपात –0.5 प्रतिशत था, वह threshold पर पहुँचा और लगभग 1950 के आसपास आकर 0 डिग्री सेल्सियस हुआ। जिस temperature की बात हम कर रहे हैं, यह 1950 से शुरू हुआ। आज 2009 में आकर जो हमारा base level था, उस temperature की वृद्धि पूरी दुनिया में 0.74 डिग्री सेल्सियस है। यह पिछले 50 वर्षों की कहानी है। महोदय, अब अगर हम यह विषय आगे बढ़ाएँ, तो उसी 1955 में पूरी दुनिया में जो carbon emission था, वह 1.5 बिलियन टन था, 2005 में आकर यह carbon emission लगभग 7.5 बिलियन टन हो गया और हम जो 2055 में बात कर रहे हैं, यह लगभग 14 बिलियन टन हो जाएगा। जब यह 14 बिलियन टन हो जाएगा, तो उस समय इस दुनिया का तापमान लगभग 4 से 5 डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ जाएगा। अब यह विषय हम लोग स्वीकार करते हैं कि जो carbon emission हो रहा है, उसके कारण जो परिस्थिति उभर कर आई है, आखिर इसके कारण क्या हैं? मूल रूप से क्यों इतनी वृद्धि हो रही है, carbon emission क्यों हो रहा है? इसका मुख्य कारण है कि जो विपसे हैं, जैसे तेल, कोयला, गैस, हमारी जो प्राकृतिक सम्पत्ति है, हम उसका दोहन कर रहे हैं और बड़े पैमाने पर दोहन कर रहे हैं और पूरी दुनिया यह मान कर चलती थी कि दोहन के बाद ये खत्म नहीं होंगे, ये समाप्त नहीं होंगे, लेकिन अब दुनिया का भी यह मानना हो रहा है कि एक समय के बाद ये लुप्त हो जाएंगे। वैसी परिस्थिति में, जब ये लुप्त हो जाएंगे, तो वैकल्पिक चीजों के बारे में हमने सोचना शुरू किया। लेकिन अगर इस दुनिया में सबसे ज्यादा प्रभाव हुआ है, तो fossils overuse से, industrialization से, हवाई जहाज की यात्रा से, transportation से, गाड़ियों से, modern lifestyle से, housing infrastructure से, real estate से, घरों के निर्माण से, गाड़ियों से, air-conditioner से, इस प्रकार से infrastructure के लिए अपनी आम सहूलियतों के लिए हम लोगों ने जो उपभोगवाद को बढ़ाया है, उसके कारण निरन्तर इस कार्बन डाई–ऑक्साइड emission का विस्तार हुआ है। आज हम पूरी दुनिया में मानते हैं कि प्रत्येक वर्ष CHG, जो ग्रीन हाउस गैसें हैं, उनका emission लगभग 2.4 प्रतिशत की दर से प्रत्येक वर्ष बढ़ रहा है। अब इसका परिणाम क्या है? पूरी दुनिया में हम देख रहे हैं कि लगातार इसका

परिणाम हो रहा है। अगर हम लोग समुद्र की तरफ ध्यान दें, तो वहां पर देख रहे हैं कि पूरी दुनिया में यह स्थिति हो रही है कि लगभग 40 द्वीप देश विलुप्त होने की स्थिति में हैं और भारत के भीतर भी हो रहा है। अंडमान और निकोबार आईलैंड्स के कई आईलैंड्स के ऊपर खतरा मंडरा रहा है। लक्षद्वीप के कई आईलैंड्स पर खतरा मंडरा रहा है। यहां तक कि सुंदरबन में दो ऐसे आईलैंड्स हैं, जो गायब हो गए हैं। वहां के लगभग 6 हजार लोग इर्द–गिर्द दूसरे स्थानों पर जाने के लिए मजबूर हो गए। महोदय अगर यही स्थिति रही और इस समुद्र तट की जो बढ़त हो रही है, उससे साउथ ईस्ट एशिया और एशिया के बहुत सारे देश प्रभावित होंगे। इससे बंग्लादेश भी प्रभावित हो रहा है। अगर यही सिलसिला चलता रहा, तो बंग्लादेश में लगभग 50 मिलियन लोग प्रभावित होंगे। अगर वे विस्थापित होंगे, तो स्वाभाविक रूप से वे कहां आएंगे? स्वाभाविक रूप से वे भारत में आएंगे।

तो कहीं न कहीं अंतर्देशीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों के कारण तापमान में बहुत परिवर्तन हो रहे हैं। सार्डिन्स, जो अपने आप में बहुत पौष्टिक मछली है, जो अरेबियन सी में मिला करती थी, लेकिन वहां पर तापमान में वृद्धि हुई तो वह चल करके बे ऑफ बैंगाल में पहुंच गई। तो प्राकृतिक व्यवस्था जो है, वह गड़बड़ा रही है। लक्षद्वीप के कोरल्स मरते जा रहे हैं। दुनिया भर के लोग मेरीन लाइफ के बारे में बात करते हैं, वह कोरल्स मरते जा रहे हैं। ग्लेशियर्स लगातार पिघलते जा रहे हैं और उनकी थिनिंग के कारण आज पूरी दुनिया में पानी का संकट पैदा हो रहा है। हम सब जानते हैं कि दुनिया में मिलने वाले सारे पानी का 3 प्रतिशत ही पीने योग्य है। आज दुनिया में लगभग तीन बिलियन लोग पानी के लिए अभावग्रस्त हैं। इस पूरी पारिस्थितिकी में आप देखेंगे कि तापमान बढ़ने से क्या हो रहा है। हिमाचल प्रदेश के निचले इलाके में जो सेब की फसल हुआ करती थी, तापमान बढ़ने से वह आहिस्ता–आहिस्ता ऊपर जा रही है और नीचे वाले लोगों पर उसका प्रभाव पड़ रहा है। जहां तक गेहूं की फसल का सवाल है, अगर दुनिया का तापमान एक डिग्री सेंटिग्रेट भी ऊपर चला गया तो दुनिया में चार से पांच मिलियन टन गेहूं का उत्पादन कम हो जाएगा। स्वाभाविक रूप से ऐसी परिस्थिति भुखमरी का कारण बन सकती है। भारत के अंदर 15 से 30 प्रतिशत ऐसा स्थान है, जिसे very dry line कहते हैं। जहां तक रेगिस्तान का सवाल है, प्रत्येक वर्ष भारत की धरती 15,000 स्क्वेयर किलोमीटर रेगिस्तान में परिवर्तित हो रही है। आखिर में यह पूरी परिस्थिति जो उत्पन्न हुई है, इसके लिए जिम्मेवार कौन है? क्या हम जिम्मेवार हैं? मंत्री जी जानते हैं कि दो बड़े प्रोटोकोल माने जाते हैं, One was the Montreal Protocol; the other

was the Kyoto Protocol. महोदय, मेरे पास पंद्रह मिनट बचे हुए हैं, जिस विषय पर मैं आना चाहता हूं, अब मैं वहां पहुंच गया हूं। मांट्रियल प्रोटोकोल उस समय हुआ, जब हम बात करते थे कि दुनिया में Ozone layer depletion हो रहा है। विकसित देशों ने कहा कि कैंसर का प्रभाव बढ़ रहा है, leukaemia बढ़ रहा है और यह इसलिए हो रहा है कि अल्ट्रा वायलेट रेडिएशन इंसान पर आ रहा है। इस रैडिएशन का स्वरूप बढ़ता जा रहा है, इसलिए उसे रोकना है। जब पूरी दुनिया के लोगों ने कहा कि उसे रोकना है, तो 1930–40 में विकसित देशों ने इसके लिए नहीं कहा। इस पूरे पर्यावरण, को जो सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाता है, वह है CFCs में, Refrigerators में, Air Conditioners में जिस गैस का उपयोग किया जाता है, लेकिन विकसित देशों ने इस बात को भी नहीं माना कि इसके कारण मानव जाति पर प्रभाव पड़ रहा है। इस बात को उन्होंने तब तक नहीं माना, जब तक उनके पास Freon dk CFCs का कोई सब्स्टीट्यूट नहीं निकल गया। जब उनके पास सब्स्टीट्यूट निकल गया, तब उन्होंने कहा कि हम इस बात को स्वीकार करते हैं और मॉन्ट्रियल प्रोटोकोल पर साइन करते हैं। अब हम आगे बढ़ते हैं, 1990 के शतक में, मांट्रियल प्रोटोकोल पर हस्ताक्षर हुआ और निश्चित रूप से उस समय से इस पर काम शुरू हुआ और CFCs के जो एमीशन्स थे, उन पर हम लोगों ने कंट्रोल किया और जिसमें हम कामयाब भी हुए। यह एक अलग प्रोटोकाल है। लेकिन कही न कहीं विकसित देशों ने अपने हिसाब से ही उसका उपयोग किया।

महोदय, अब हम क्योटो प्रोटोकोल पर आते हैं। अचानक पूरी दुनिया को लगने लगा कि कार्बन एमीशन ज्यादा है, टेम्परेचर बढ़ रहा है। अगर आप पूरी दुनिया का एवरेज निकालें, तो यह टेम्परेचर बढ़ाने का काम, कार्बन एमिशन सबसे ज्यादा इस दुनिया में यदि कोई कर रहा है, तो वह सबसे पहला स्टेट है, जिसका नाम है यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका। आज वह प्रतिव्यक्ति 20 टन कार्बन एमिशन करता है। उसके बाद कोई देश है, तो वह रशिया है और उसके बाद यूरोपियन यूनियन का नम्बर आता है, जो प्रति व्यक्ति 9.4 टन करता है, जापान प्रति व्यक्ति 9.87 टन करता है। भारत में हम कितना करते हैं, भारत में हम प्रति व्यक्ति 1.4 टन कार्बन एमिशन करते हैं। वर्षों से कार्बन का एमीशन, जो विकसित देश कर रहे थे, आज जब उसका प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ा, तो भारत के आंकड़े भी सामने आ गए। इसका वर्ल्ड एवरेज 4.4 टन प्रतिव्यक्ति के आसपास है। अब इसमें देखिए, सबसे महत्वपूर्ण विषय अब आता है। भारत सरकार ने इसके लिए क्या

किया? वर्षों तक इस बात की चर्चा चल रही थी, कई कन्वेन्शन्स हुए, कई प्रोटोकोल हुए, यूएन कॉन्फरेंस हुई, हमारे प्रधान मंत्री जी को भी इस बात की पूरी जानकारी है। प्रधान मंत्री जी अभी गए, ला अकिला इटली में। उसे कैसे प्रोनाउंस करते हैं, ला अकीला या ला टकीला ठीक है, ला एक्वीला। So, the Prime Minister went to L'Aquilla. वर्षों से यह कहा जाता रहा कि, साहब, हमारा स्टैंड है कि हम अपने टैम्परेचर को कैप नहीं करेंगे। हमारी स्टेटिड पोज़ीशन है कि, 'We will not accept it". Finally, for the first time in Indian Protocol on Environment, it was decided and the Prime Minister said, कि पूरी दुनिया यह कह रही है, सब लोग कह रहे हैं, कुछ साइंटिस्ट भी कह रहे हैं। कोई मानक नहीं, कोई टिप्पणी नहीं, कोई विश्लेषण नहीं, प्रधानमंत्री जी ने जा करके उस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पूरी दुनिया को कह दिया कि भारत 2 डिग्री सैंटिग्रेट को स्वीकार करता है।

हम प्रधान मंत्री जी से पूछना चाहेंगे कि क्या आपने अपने मंत्रालय से बात की, क्या आपने पर्यावरण मंत्रालय से बात की, क्या आपने अपने साइंटिस्ट्स से बात की और क्या आपने निर्णय लेने से पहले उससे सम्बन्धित लोगों से बात की? आपके मन में यह आया, क्योंकि आप दुनिया के सामने अपनी वाहवाही लूटना चाहते हैं और आप कहते हैं कि हम दुनिया के साथ चलेंगे, इसलिए आपने सहमति प्रदान कर दी। आपने ड्राफ्ट में डाल दिया और आप क्या कहते हैं? आप यह कहते हैं कि यह हमारा aspiration है। It is not our final decision; it is our aspiration. Now, you are talking about the country. Now, see, what are the implications? Sir, another very interesting thing is happening. What is happening is, the Prime Minister, who is a very respected Prime Minister, जो आप सब को यहाँ दोबारा लेकर आए हैं, यह जब–जब बाहर जा रहे हैं, तब–तब अपने मंत्रालय से–– जब यह विदेश–नीति पर गए, बलुचिस्तान पर चर्चा करके आए, लेकिन विदेश मंत्रालय से बात नहीं की। पर्यावरण पर गए, लेकिन पर्यावरण मंत्रालय से बात नहीं की, उसे छोड़ दीजिए। उन्होंने अपनी पार्टी से बात नहीं की, उसे भी छोड़ दीजिए। पार्लियामेंट से बात नहीं की और विपक्ष को तो पूछने का काम ही नहीं है, क्योंकि यह दोबारा सरकार में आ गए। प्रधान मंत्री जी को जरूरत ही महसूस नहीं हुई कि किसी को इस मामले में confidence में लिया जाए। खैर, यह इनकी अपनी बात है और हम इस पर कोई चर्चा नहीं करना चाहेंगे। आखिर में हम हर जगह, वित the last two occasions, we have been going as a victim, कि हम victim हैं,

हम परेशान हैं और वहाँ से हम आरोपी के रूप में लौट रहे हैं। We are going as victims and coming back as accused. हाँ, हम मुद्दई बन कर गए थे और आरोपी होकर आ रहे हैं। दुनिया में ऐसा कहीं नहीं हुआ होगा कि at the Prime Ministerial level, a delegation goes, and you are made an accused on two occasions, and two international protocols are signed like that. Now, the question arises, are we responsible for it? How have you agreed to this 2 degrees? This is called differential responsibilities. Why should we become a part of your differential responsibility for a wrong which you have been doing for two hundred years? आप एक पाप करते हैं, उस पाप का जुर्माना आप पाँच रुपए देते हैं और जिस पाप को हमने नहीं किया, उसके लिए आप हम पर सौ रुपए का जुर्माना लगाने की तैयारी कर रहे हैं। आखिर यह कहाँ का न्याय है? यह कैसा न्याय है कि आप उस क्रम के लिए हमारे ऊपर इतना बड़ा आरोप लगा रहे हैं? आज उपभोक्तावाद कहाँ है? How much power do we consume? आज तक हमारे देहात में 70 प्रतिशत लोग–– क्या प्रधान मंत्री जी को यह पता नहीं था कि 80 प्रतिशत लोग इस देश के सौ रुपए के भीतर जीते हैं? क्या प्रधान मंत्री जी को यह पता नहीं था कि दुनिया के most malnourished children and women, one-third of them, live in India. क्या उनको यह पता नहीं था कि child-birth में, सब–सहारा से ज्यादा, अगर पूरी दुनिया में महिलाएँ मरती हैं, तो वह भारत में मरती हैं? क्या इनको यहाँ की गरीबी के बारे में जानकारी नहीं थी? कल अगर मुझे छपरा में एक पावर प्लांट लगाना हो, तो क्या आप कल इस text की सहमति प्रदान कर देंगे? कल आप कोपेनहेगन जाने की तैयारी कर रहे हैं। मंत्री जी, यह पता नहीं कि आपने टेक्स्ट बनाया होगा, आपका वह NetComm किस काम आएगा? आप कोपेनहेगन में जाएँगे, आपके सामने वह पत्र फेंका जाएगा। उस समय प्रधानमंत्री जी वहाँ नहीं होंगे और आपको यह कहा जाएगा कि आपके प्रधान मंत्री ने 2 degrees Centigrade की सहमति प्रदान की है। उस दिन आप क्या कहेंगे, महोदय? उस दिन इस देश के लोगों को आप क्या कहेंगे, क्योंकि आपने तो उसी फोरम में स्वीकार कर लिया है? Why should we go for 2 degrees? Where is this calculation? Why can't it be staggered? अगर हम 2 degrees Centigrade की बात मान भी लें, तो हम कितना भी कार्बन जलाएँ, कितनी भी गाड़ियाँ चलाएँ, कितना भी नुकसान करें, लेकिन, हम वहाँ पहुँच ही नहीं सकते हैं। तब आपने इसे स्वीकार क्यों

किया? क्योंकि, आप दूसरे देशों की liability अपने ऊपर लेना चाहते हैं। महोदय, हम कुछ भी कर लें, किसी भी स्थिति तक चले जाएँ, हम अगर इसे चार डिग्री कह दें या पाँच डिग्री कह दें, लेकिन हमारे पास उतनी कैपेसिटी कहाँ है, हमारे पास उतना धन कहाँ है, हमारे पास उतनी टेक्नोलॉजी कहाँ है? महोदय, हम चाह कर भी यह नहीं कर पाएँगे। Then, we have taken an onus of the world. It is a liability of the world being imposed on the developing nations. How can we accept it, Sir? Carbon Sink, सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप विकसित देशों से बात कीजिए कि हम फॉरेस्ट का विकास करना चाहते हैं, हम बड़ी–बड़ी पौधशालाएँ लगाना चाहते हैं, पेड़ लगाना चाहते हैं, तो विकसित देश कहेंगे कि यह हमें स्वीकार्य नहीं है, we will not support you in your carbon credit for all these things, पेड़ लगाना कोई बड़ी बात नहीं है। उनको यह चाहिए कि आप wind-mills लगाएँ, उनको चाहिए कि आप solar-energy plants लगाएँ। इस प्रकार वे आपको उसी में मदद करेंगे, जहाँ उनकी अपनी टेक्नोलॉजी बिक सके। आप तो naturally conservation कर रहे हैं। भारत ने तो उनके प्रोटोकॉल पर साइन करने से पहले ही इस पर काम शुरू कर दिया था। हमारा Forest Conservation Act पहले आया, हमारा Environment Protection Act पहले आया। यहाँ तक कि the Supreme Court also started regulating the coastal zones. We have got into that preservation much before any international protocol has been signed. Are we being appreciated for that? Instead, we have been made to sign an agreement or to head towards signing an agreement which can be retrospectively affecting the welfare of the country. Here is a situation. महोदय, कार्बन क्रेडिट की बात करते हैं। कार्बन क्रेडिट उन्हीं चीजों के लिए देना चाहेंगे, आप विस्तार करना चाहते हैं, आप उन चीजों का उत्सर्जन करना चाहते हैं and how can we be made a victim, Sir? On population, it is never a factor as far as the emission standards are concerned. In this country, we are heading for population control. There are countries in the world जिनकी आबादी नहीं बढ़ रही है या बढ़ाने की चाह भी है। हम तो अपने देश की आबादी को कम कर रहे हैं। Gradually, we are trying to control. South has achieved that. The other States are struggling, and they will achieve that. अगर हम प्रति व्यक्ति आबादी को रोकने की स्थिति में हैं, then are you helping us in that? Are you

expecting that every individual who is not born, who has not come, to reduce the load? इस दुनिया का जो carbon footprint या bio-capacity है, उसको हम मर्गीनेज नहीं कर रहे हैं। We are using everything possible to protect the environment. There is a nation which is walking free telling the whole world, and, all the developed countries have come together, we would be squeezed out of that. जिस प्रकार से हम इस समझौते की तरफ बढ रहे हैं, हमें वे मसल कर रख देंगे। Capping growth is an argument. Possibly a senior colleague has said कि साहब, हम doles पर जीयेंगे। भारत में हमें कुछ नहीं करना है। अगर हमें छपरा, मुजफरपुर, पंजाब, राजस्थान या गुजरात में पावर प्लांट लगाना हो तो उसका निर्णय हम स्वयं नहीं कर पायेंगे। That has to be decided by someone beyond the country, not by the Minister for Environment and Forests, not by the Minister for Petroleum and Natural Gases, not by the Minister for Coal, not by the Prime Minister. आने वाले दिनों में इस देश के विकास के लिए अगर एक फैक्टरी भी लगानी होगी तो उसकी स्वीकृति भारत सरकार नहीं देगी, बल्कि उसकी स्वीकृति अमरीका की सरकार, यूरोप की सरकार और जापान की सरकार देगी। ऐसी स्थिति अब उत्पन्न होने वाली है और यह कहा जा रहा है कि हमारा अपना आत्मस्वाभिमान है! We will not live on doles. अगर आप चाहते हैं कि हम अपनी पूरी इकॉनामी को कि हम अपना carbon emission cut करें, हम अपने development को बाधित करें, हम अपना employment generation करें, we will not accept it. यह दूसरी तरह की गुलामी है जो पर्यावरण के नाम पर पूरे भारत और विकासशील देशों पर थोपी जा रही है। आखिर हम इसको कैसे स्वीकार करें? What is this differential responsibility? Could the Minister explain it to us? Differential responsibilities, मतलब, विकसित देशों के लिए जिम्मेवारी दूसरी और अविकसित देशों के लिए जिम्मेवारी दूसरी! आखिर यह परिभाषा कब स्थापित होगी कि हमारे दायित्व क्या हैं? हमारा जो दायित्व है, हमारी जो उपलब्धि है, हमने इस पर्यावरण के लिए जो किया है, उसकी कीमत लगाने के लिए कोई तैयार नहीं है। लेकिन जो पूरी दुनिया का शोषण उपभोक्तावाद के आधार पर किया है, उसके विकास में जो प्रदूषण फैलाने का काम था, वह प्रदूषण फैलाया है आखिर इसके लिए कौन जिम्मेवार होगा?

महोदय, मैं अभी हाल में एक कार्यक्रम में गया। हमारे सिविल एविएशन

मिनिस्टर भी उस कार्यक्रम में थे। मैं एक अंतिम उदाहरण दे रहा हूँ कि किस प्रकार से the whole world is trying to engulf India. आज हम इस बात को मानते हैं कि आप दिल्ली से लंदन जाते हैं और वापिस आते हैं, तो अगर एक व्यक्ति के ऊपर हवाई जहाज का जो कार्बन एमिशन होता है – दुनिया के ट्रांसपोर्ट में कार्बन एमिशन में जिसकी सबसे ज्यादा भागीदारी है, तो वह हवाई जहाज की भागीदारी है। Once you travel from here to London, 1.6 tonnes of carbon dioxide is emitted. Now, there is a new concept introduced, called the 'carbon neutral fees'. हम भी बड़े चकित थे। हमने कहा कि हमने ऐसी चीज तो कभी देखी ही नहीं! अगर आज इस देश में कहा गया कि साहब, अगर आप यह सवारी करते हैं, if you have an obligation towards environment, every passenger should pay a carbon neutral fee. यह जरूर है कि आज वह कह रहे हैं कि it is voluntary. कल यह आश्चर्यजनक नहीं होगा कि जब मंत्री जी कोपेनहेगेन में गये और इस पर एक मुहर लगाकर आ गये कि it will not be voluntary, it would be binding on the State, exactly the way they have capped this 2 degree centigrade emission; they may make binding the commitments on this country, and this is what this whole country is scared of today. On this we require an answer from the Prime Minister, we require an answer from the Environment and Forests Minister. It is an issue, which is going to agitate the nation. We have capped our performance. आपने हमारी गरीबी के साथ मजाक उड़ाया है। आपने हमारे विकास दर को रोकने के लिए, उस पर एक बंदिश लगाई है। आपने आने वाले दिनों में हमारे नौजवानों के रोजगार पर बंदिश लगाई है। आपने आने वाले दिनों में किसानों के ऊपर बंदिश लगाई है, आपने इस पूरे देश के विकास पर एक बड़ी बंदिश लगाकर और दुनिया के सामने अपने आपको बड़ा दिखाने के लिए, वाहवाही लूटने के लिए एक ऐसी शुरुआत की है, जिसके लिए पूरा भारतवर्ष आपको कभी माफ नहीं करेगा। महोदय, इन्हीं चंद शब्दों के साथ आप सब लोगों का आभार व्यक्त करते हुए, विशेष रूप से सरकार का आभार व्यक्त करते हुए, मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।■